

"ТАСДИҚЛАЙМАН"

Ўзбекистон Республикаси Маданият вазирлиги
Республика маданият муассасалари фаолиятини
ташқил этиш илмий-методик маркази директори



[Signature] А.Хайдаров

2019 йил "12" *декабрь*

Ўзбекистон номодий маданий мерос объектлари
МИЛЛИЙ РЎЙХАТИ

| Т.р. | НММ объекти рақами | НММ объекти номи |
|--|--------------------|---|
| Ўзликни намоён этишнинг оғзаки шакл ва анъаналари | | |
| 1. | 01.01 | Достон |
| 2. | 01.02 | Эртақлар, афсона ва ривоятлар |
| 3. | 01.03 | Мақол ва маталлар |
| 4. | 01.04 | Тез айтиш |
| 5. | 01.05 | Топишмоқ |
| 6. | 01.06 | Хўжа Насриддин ҳажвияларини айтиш анъаналари |
| 7. | 01.07 | Латифа |
| 8. | 01.08 | Лофлар |
| 9. | 01.09 | Айтимлар |
| Ижрочилик санъати | | |
| 10. | 02.01 | Мақом санъати |
| 11. | 02.01.01 | Шашмоқом |
| 12. | 02.02 | Чолғу ижрочилиги |
| 13. | 02.02.01 | Рубоб ясаш ва ижрочилик анъаналари |
| 14. | 02.03 | Мумтоз ашула йўллари |
| 15. | 02.03.01 | Катта ашула |
| 16. | 02.04 | Кўшиқчилик санъати |
| 17. | 02.04.01 | Алла |
| 18. | 02.04.02 | Ўлан |
| 19. | 02.04.03 | Лапар |
| 20. | 02.04.04 | Халфачилик |
| 21. | 02.05 | Бахши санъати |
| 22. | 02.06 | Рақс санъати |
| 23. | 02.06.01 | Хоразм рақси – Лазги |
| 24. | 02.07 | Томоша санъати |
| 25. | 02.07.01 | Дорбозлик ва дор ости томошалари |
| 26. | 02.08 | Аския |
| 27. | 02.09 | Кўғирчоқбозлик |
| 28. | 02.10 | Халқ ўйинлари |

| | | |
|--|----------|--|
| 29. | 02.11 | Ўзбек жанг санъати |
| 30. | 02.12 | Кураш |
| 31. | 02.13 | Кўпқари |
| 32. | 02.14 | Болалар фольклори |
| 33. | 02.15 | Этноспорт |
| Жамиятнинг урф-одат маросим ва байрамлари | | |
| 34. | 03.01 | Оилавий маросимлар |
| 35. | 03.02 | Палов маданияти ва анъаналари |
| 36. | 03.03 | Мавсумий маросимлар |
| 37. | 03.04 | Наврўз |
| 38. | 03.05 | Диний маросимлар |
| 39. | 03.06 | Нон билан боғлиқ анъаналар |
| Табиат ва коинот билан боғлиқ урф-одатлар | | |
| 40. | 04.01 | Йил фасллари билан боғлиқ билим ва кўникмалар |
| 41. | 04.02 | Маданий муҳит |
| 42. | 04.02.01 | Бойсун туманининг маданий муҳити |
| 43. | 04.03 | Анъанавий табобат |
| 44. | 04.04 | Чорвачилик билан боғлиқ билим ва кўникмалар |
| 45. | 04.05 | Дехқончилик билан боғлиқ билим ва кўникмалар |
| 46. | 04.06 | Боғдорчилик билан боғлиқ билим ва кўникмалар |
| 47. | 04.07 | Анъанавий халқ тақвими ва вақт ҳисоби амаллари |
| 48. | 04.08 | Пазандачилик |
| 49. | 04.08.01 | Ширинликлар тайёрлаш |
| 50. | 04.09 | Қуруқ меваларни тайёрлаш |
| Анъанавий ҳунармандчилик билан боғлиқ билим ва кўникмалар | | |
| 51. | 05.01 | Зардозлик |
| 52. | 05.02 | Кандакорлик |
| 53. | 05.03 | Гидамчилик |
| 54. | 05.04 | Дўппидўзлик |
| 55. | 05.05 | Кўғирчоқсозлик |
| 56. | 05.06 | Қулолчилик санъати |
| 57. | 05.07 | Ганчкорлик |
| 58. | 05.08 | Ёғоч ўймакорлик санъати |
| 59. | 05.09 | Қаштачилик санъати |

| | | |
|-----|-------|--|
| 60. | 05.10 | Миниатюра санъати |
| 61. | 05.11 | Марғилон ҳунармандчилик мактаби: атлас ва адрас тўқиш технологияси |
| 62. | 05.12 | Заргарлик |
| 63. | 05.13 | Темирчилик |
| 64. | 05.14 | Сангтарошлик |
| 65. | 05.15 | Наққошлик санъати |
| 66. | 05.16 | Ҳаттотлик санъати |

ЮНЕСКОнинг Зудлик билан муҳофаза остига олинishi лозим бўлган номоддий маданий мерос объектлари рўйхатига тавсия этилиши режалаштириладган объектлар рўйхати

1. Қўбиз ижрочилиги

ЮНЕСКОнинг Инсоният номоддий маданий мероси репрезентатив рўйхатига тавсия этилиши режалаштириладган объектлар рўйхати

1. Бахши санъати
2. Этноспорт
3. Ёгоч ўймакорлик санъати
4. Халфачилик
5. Ўзбек жанг санъати

ЮНЕСКОнинг Номоддий маданий мерос муҳофазасига оид энг яхши тажрибалар реестрига тавсия этилиши режалаштириладган ишлар рўйхати

1. Риштон кулолчилик мактаби

Бахши санъати

Ўзбек халқ оғзаки ижоди бу миллатнинг бадий тарихидир. Достонлар эса халқ ижодида муҳим ўрин тутади. Достончилик санъати эса халқ оғзаки поэтик ижодидаги қадимий эпик аънаналаридан бири ҳисобланади.

Бахши санъати халқнинг эпик асарларини соз жўрлигида ижро этишдир. Авлоддан авлодга ўтиб сайқалланиб келаётган бахши санъати халқимизнинг маънавияти, юксак бадий салоҳиятини намоён этадиган ёрқин кўзгудир. Бахши – терма, кўшиқ ва достонларни сақловчи, ёддан куйловчи, айтувчи, авлоддан-авлодга етказувчи санъаткор, халқ достончиси. Бахши халқ турмуши ва маданиятини, ўзи яшаб турган юрт тарихини ва бирор соз чалишни билиши, ҳофизлик санъатини пухта эгаллаган бўлиши керак. У жонли халқ тилининг турли шаклларида, сўз ўйинлари ва қочиримларидан, халқ мақоллари ва ибораларидан унумли фойдалана олиши лозим. Тингловчиларни ром этувчи оҳанг топа билиш, достонни жозибали ва қизиқарли қилиб айтиш достон айтишнинг асосий талабларидан. Бу эса, ўз навбатида табиий истеъдод, кучли идрок, мунтазам равишда кунт ва чидам билан машқ қилишни талаб этади.

Юртимизда достон куйлаш аънаси қадимда икки йўналишда ривожланган. Биринчи йўналиш – Кўрғон, Булунгур, Нарпай, Нурота, Шахрисабз, Қамай, Шеробод мактабларида дўмбира чертиб якка ҳолда, ички бўғиз овоз билан ижро этилган. Иккинчи йўналиш – Хоразмда тор, дотор, гижжак, гармон, буламон, кўшна, доира жўрлигида баъзан якка, баъзан жуфт ҳолда, очиқ овоз билан ижро этилган.

Қадимдан бахши санъатини етказувчилари асосан эркаклар ҳисобланиб, устозлар томонидан халқ достонлари одатда ёш шогирдларга ўргатилган. Устоз-шогирд аънаси туфайли ушбу санъат тури ҳозирги кунгача етиб келган. Бахши санъатини асосий тингловчилари достон ва термаларни байрамлар, тўй маросимлари, турли йиғинлар ва кенг давраларда тинглашган. Хоразм вилоятида халфалар, Самарқанд, Қашқадарё ва Сурхондарё вилоятларида эса аёл бахшилар ҳам мавжуд бўлиб, улар фақат аёллар йиғилган давралардагина терма ва достонлардан ижро этишган.

Бахши санъати ўзбеклар турмуш тарзи, маросим ва аъналарга сингиб кетганки, оилавий тўй маросимлар ҳамда оммавий байрамларда албатта бахшилар ижросидаги достонлар, термалар тингланади. Бахшилар ижро этган достонлар эса инсонларда айниқса, ёш авлод вакилларида ватанга муҳаббат, инсонлар орасидаги меҳр-оқибат, ота-онага ҳурмат, вафо ва садоқат каби туйғуларни камол топишига хизмат қилади. Бу эса миллат ва элатлар ўртасида дўстлик, биродарлик ва тотувликнинг янада мустаҳкам бўлишига замин яратади.

Республика маданият муассасалари
фаолиятини ташкил этиш илмий-
методик маркази директори



Азамат Ҳайдаров



“APPROVED”

A. Khaydarov, Director,
Republican Scientific-
Methodological Centre for Organization
of Activities of Culture institutions

12 December 2019

NATIONAL ICH LIST
of the Republic of Uzbekistan

| No. | Number of ICH element | Name of ICH element |
|--|-----------------------|---|
| Oral traditions and expressions | | |
| 1 | 01.01 | <i>Doston</i> |
| 2 | 01.02 | Tales, Myths and Legends |
| 3 | 01.03 | Proverbs and Parables |
| 4 | 01.04 | Tongue-twisters |
| 5 | 01.05 | Riddles |
| 6 | 01.06 | The Telling Tradition of Hoja Nasreddin Anecdotes |
| 7 | 01.07 | Anecdotes |
| 8 | 01.08 | Tall tales |
| 9 | 01.09 | Sayings |
| Performing arts | | |
| 10 | 02.01 | <i>Maqom</i> art |
| 11 | 02.01.01 | Shashmaqom |
| 12 | 02.02 | Instrumental performance |
| 13 | 02.02.01. | Traditions of making and playing <i>rubab</i> |
| 14 | 02.03 | Uzbek classical music style |
| 15 | 02.03.01. | Katta ashula |
| 16 | 02.04 | Singing art |
| 17 | 02.04.01 | <i>Alla</i> (Lullaby) |
| 18 | 02.04.02 | <i>O'lan</i> (Wedding song) |
| 19 | 02.04.03 | <i>Lapar</i> |
| 20 | 02.04.04 | <i>Khalfa</i> art |
| 21 | 02.05 | Bakhshi art (Story-telling art of Bakhshi) |
| 22 | 02.06 | Dancing art |
| 23 | 02.06.01 | Khorazm dance- <i>Lazgi</i> |
| 24 | 02.07 | Performance art |
| 25 | 02.07.01 | Rope-walking art and rope performances |
| 26 | 02.08 | Askiya |
| 27 | 02.09 | <i>Qoghirchoqbozlik</i> (Puppetry) |
| 28 | 02.10 | Folk games |

| | | |
|---|----------|---|
| 29 | 02.11 | Uzbek martial art |
| 30 | 02.12 | <i>Kurash</i> (wrestling) |
| 31 | 02.13 | <i>Ko'pkari</i> |
| 32 | 02.14 | Children's folklore |
| 33 | 02.15 | Ethno sport (national games) |
| Social practices, rituals and festive events | | |
| 34 | 03.01 | Family rituals |
| 35 | 03.02 | Palov culture and traditions |
| 36 | 03.03 | Seasonal rites |
| 37 | 03.04 | Navruz |
| 38 | 03.05 | Religious ceremonies |
| 39 | 03.06 | Traditions associated with bread |
| Knowledge and practices concerning nature and the universe | | |
| 40 | 04.01 | Knowledge and practices concerning seasons of the year |
| 41 | 04.02 | Cultural spaces (reserves) |
| 42 | 04.02.01 | Boysun |
| 43 | 04.03 | Traditional medicine |
| 44 | 04.04 | Cattle breeding |
| 45 | 04.05 | Agriculture |
| 46 | 04.06 | Gardening |
| 47 | 04.07 | Traditional calendar |
| 48 | 04.08 | Culinary art |
| 49 | 04.08.01 | Preparing of sweets |
| 50 | 04.09 | Preparing of dried food |
| Traditional craftsmanship | | |
| 51 | 05.01 | Gold embroidery |
| 52 | 05.02 | Patchwork |
| 53 | 05.03 | Carpet-weaving |
| 54 | 05.04 | Skullcap embroidery |
| 55 | 05.05 | Puppet-making |
| 56 | 05.06 | Pottery |
| 57 | 05.07 | Gypsum carving |
| 58 | 05.08 | Wood carving |
| 59 | 05.09 | Embroidery |
| 60 | 05.10 | Miniature art |
| 61 | 05.11 | The Margilan Crafts Development Centre: Safeguarding of the Atlas and Adras Making Traditional Technologies |
| 62 | 05.12 | Goldsmithery |
| 63 | 05.13 | Blacksmithing |
| 64 | 05.14 | Stone carving |
| 65 | 05.15 | Painting art |
| 66 | 05.16 | Calligraphy art |

**List of ICH
in need of urgent safeguarding**

1. *Qobiz* performance

ICH elements recommended for inclusion into the UNESCO's Representative List of Intangible Cultural Heritage of Humanity

1. *Bakhshi art*
2. Ethno sport (national games)
3. Wood carving art
4. *Khalfachilik*
5. Uzbek Martial arts

List of documents recommended for inclusion into the UNESCO registry of the best experiences in Intangible Cultural Heritage safeguarding

1. *Rishton* school of pottery

Bakhshi Art

Uzbek folklore is the artistic history of this nation. *Dostons* (Epics) play significant role in folk art and it is one of the oldest epic traditions in folklore. Bakhshi art is a performance of folk epics with accompaniment of instrument. Bakhshi art, which has been passed down from generation to generation, is a mirror of spirituality and high artistic potential of our people. Performer of the art of doston narration, *bakhshi*-poet — is an artist who sings and tells poems and *dostons* by heart and delivers them to the next generations. Bakhshi performer should know the people's entity and culture, the history of the country he is living in and has to be master of the art of singing. He has to be able to make an efficient use of different forms of people's language, word games and quirks, proverbs and phraseology. One of the main requirements of doston singing are the ability to find a melody that can appeal on the audience and telling doston as interesting and attractive as possible. This is at the same time, requires natural talent, strong mind, regular exercises with determination and patience. In our country, the tradition of doston performance is developed in two directions. The first direction - in the Kurgan, Bulungur, Narpay, Nurota, Shakhrisabz, Kamai, Sherabad schools it was performed in deep-throat solo and with accompaniment of drum. The second direction – in Khorezm it was performed sometimes solo and sometimes in pair with the help of instruments *tor*, *dutor*, *gijjak*, accordion, *go'shnay*, tambourine in a tender voice.

Since ancient times, *bakhshi* bearers were traditionally men and knowledge on folk epics were transmitted from masters to young apprentices. This type of art has survived to this day because of the "*Usto-shogird*" (Master-apprentice) traditional method of transmission of the knowledge. The main audience of the Bakhshi art listened to epics during holidays, wedding ceremonies and various gatherings. In Khorezm region performers were khalfas and in Samarkand, Kashkadarya and Surkhandarya regions female singers performed selected epic poems during women gatherings for women only.

Bakhshi art became important in rituals and traditions of Uzbek peoples life, so that family gatherings, wedding ceremonies and public holidays are not conducted without epics of *bakhshi* performers. *Bakshi* poems contribute to the development of feelings of love for the country, love for people, respect for parents, loyalty and devotion of people, especially the younger generation. It promotes friendship, brotherhood and harmony among nations.

**Director, Republican Scientific-
Methodological Centre for Organization
of Activities of Culture institutions**



Azamat Khaydarov